**B.Ed - 2nd Year** **Nakul Sah**

**Biological Science** **Assistant Professor**

**Course- 7(b)**

**Lecture – 14**

# Demerites of curriculum

# पाठ्यचर्या के दोष

विज्ञान पाठ्यचर्या निर्माण में बहुत भी सावधनियां रखी गई है लेकिन फिर भी थोड़े बहुत दोष अभी भी इसमें व्याप्त हैं । जो कि निम्मलिखित है :–

1. **पाठ्यचर्या में 'अनुभवो की सम्पूर्णता' के सिद्धान्त की अवहलेना की गई है।**
2. **विज्ञान के पाठ्यक्रम की संकुचित दृष्टिकोण** (Science Curriculum is narrowly) :–

   पाठ्यचर्या द्वारा शिक्षा उद्देश्यों की पूर्ति होती है। न कि वह सम्पूर्ण शिक्षा है। पाठ्यचर्या एक विधि है न कि अन्त। इसके निर्माण में न तो उद्देश्यों को ध्यान में रखा जाता है। और न ही इसका सम्बन्ध बालकों के दैनिक जीवन में होता है। इस प्रकार आधुनिक युग में विज्ञान के पाठ्यचर्या का दृष्टिकोण बहुत ही संकुचित है।

3. **पाठ्यचर्या सैद्धान्तिक** (It highly thcoretical) :–

हमारे देश में विज्ञान शिक्षण एक सैद्धान्तिक रूप में पढ़ाया जाता है। तथा प्रयोगशालाओं का अभाव रहता है। जिससे वैज्ञानिक विधि का प्रशिक्षण नहीं हो पाता है। इस प्रकार प्रचलित पाठ्यचर्या केवल सैद्धान्तिक होती है जैसे म.प्र. में

प्राइवेट विद्यालय और महाविद्यालयों की संख्या अधिक है और इनमें न तो कोई प्रयोगशाला है और न ही पुस्तकालय।

4. **पाठ्यचर्या समान तथा स्थिर** (It is rigid & uniform) :–

वातावरण से विज्ञान का ज्ञान होता है। पाठ्यचर्या तैयार करने में अलग–अलग वातावरणों को ध्यान मे नही रखा जाता है। ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियो के लिए समान पाठ्यचर्या होती है। जबकि दोनों के वातावरण भिन्न होते है।

5. **पाठ्यसामग्री की अधिकता** (Over crowding of materials) :–

पाठ्यचर्या को आधुनिक रूप देने के लिए पाठ्यचर्या में बहुत सारी वैज्ञानिक सूचनाओं को एकत्रित कर लेते है पर इससे विज्ञान के उद्देश्यों की पूर्ति नहीं होती है।

6. **परीक्षा की प्रधानता** (Domonation of Exam) :–

विद्यालय के समस्त कार्य परीक्षा की दृष्टि से किये जाते है इसलिए विज्ञान परीक्षा प्रधान हो जाता है।

7. **पाठ्यचर्या छात्रों का आवश्यकता व रूचि अनुकूल नहीं:–**

पाठ्यचर्या सभी छात्रों की रूचि व आवश्यकतानुसार नहीं होता है क्यों कि आवश्यकताएं और रूचि भिन्न–भिन्न होती है।

●●●●●●●●